शीत युद्ध (COLD WAR)

1941 में हिटलर के द्वारा जब सोवियत संघ पर आक्रमण किया गया तब पश्चिमी
देश (अमेरिका, ब्रिटेन तथा अन्य पश्चिमी यूरोपियन शक्तियाँ) सोवियत संघ की
सहायता के लिए पहुँच गया। सोवियत संघ एवं उसकी पूर्वी यूरोपियन मित्र
पूर्वी सेना कहलाती है। जब तक द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त नहीं हुआ तब तक
ये सेना सोवियत संघ के मदद के लिए काम करती रही, जिसका परिणाम
यह निकला कि पुराने शक्ति संतुलन अर्थात् हिटलर का विध्वंश हो गया, और
पुनः विश्व में दो महान शक्तियों का उदय (i) सोवियत संघ और (ii) अमेरिका
के रूप में हुआ। दोनों महाशक्तियों ने नाजीवाद और फासीवाद (हिटलर) को
समाप्त करने में सहयोग किया था। द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्ति के पश्चात
विश्वशांति, सुरक्षा और सहयोग के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक संगठन
का निर्माण करना था जो संयुक्त राष्ट्र के रूप में अभ्युदय हुआ। संयुक्त
राष्ट्र के निर्माण से विश्व में एक नवीन आशा का संचार हुआ। लेकिन संयुक्त
राष्ट्र के स्थापना के साथ ही सोवियत संघ और अमेरिका में अपने-अपने
राष्ट्रीय स्वार्थों को लेकर आपस में मतभेद गहराते गया और यह इतनी
गहराई तक पहुँच गया कि विश्व के अन्य देशों के लिए चिन्तनीय हो
गया, और विश्व शीतयुद्ध के आहट से गमगीन हो गया। अमेरिका
और सोवियत रूस एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोपों की वर्षा करने लगा,
विरोध इतना बढ़ गया कि तृतीय विश्वयुद्ध की संभावना दिखाई देने लगी।
परिणाम यह हुआ कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में गुटबन्दी का दौर शुरू हो गया।
इन दोनों ही गुटों ने एक दूसरे के विरुद्ध राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक,
राजनीतिक और यदि संभव हुआ तो सैनिक मोर्चे पर भी प्रहार करने लगे।

शीत युद्ध की लड़ाई अस्त्र-शस्त्र से न लड़ा जाकर अन्य साधनों
से लड़ा जाता है। इस युद्ध में किसी भी पक्ष के सिर्फ एक ही व्यक्ति की
हत्या नहीं होती लेकिन युद्ध के द्वारा भयानक सर्वनाश और लाखों-करोड़ो
हत्याओं की संभावना उत्पन्न हो जाती है। शीत युद्ध एक ऐसा युद्ध है जिसका
रणक्षेत्र मनुष्य का मस्तिष्क है। यह मनुष्यों के मन से लड़ा जाने वाला
युद्ध है। यह विश्व समुदाय के सम्बन्धों को घृणा और वैमनस्य से
गन्दा कर देता है, अतः इसे स्नायु (महीन, सूक्ष्म) युद्ध भी कहा जाता है।

शीत युद्ध के कारण (Causes of the Cold War) :- दोनों

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

महाशक्तियों के मतभेद के फलस्वरूप निम्नलिखित कारण उभरकर आये। (2)

(I) दोनों महाशक्तियों में सैद्धांतिक मतभेद (Theoretical differences between two superpowers) :— द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिका, सोवियत संघ तथा ब्रिटेन ने कंधा से कंधा मिलाकर धुरी राष्ट्रों का विरोध किया। लेकिन, युद्ध समाप्त होने के तुरन्त बाद सोवियत संघ का अमेरिका और ब्रिटेन से उभरता हुआ मतभेद स्पष्ट हो गया। इनके पारस्परिक मतभेद मौलिक और ऐतिहासिक थे, क्योंकि दोनों की जीवन पद्धतियाँ, सामाजिक और नैतिक मूल्य सिर्फ प्रारंभ से ही भिन्न नहीं थे, वरन वे परस्पर विरोधी भी थे। दोनों का मतभेद 1917 से ही शुरू हुआ था। सोवियत संघ में साम्यवादी शासन की स्थापना हुई। 1917 में रूस में साम्यवादी क्रांति की सफलता से पश्चिमी देश भयभीत हो उठे और सोवियत संघ की बोल्शेविक क्रांति को पश्चिमी राष्ट्रों से समाप्त करने का प्रयास बेकार गया। तब सोवियत संघ के विरुद्ध हिटलर को खड़ा किया तो हिटलर ने पश्चिमी राष्ट्रों को ही शिकार करना शुरू किया। तब मजबूर होकर पश्चिमी राष्ट्र मित्र सोवियत संघ को मैत्री बनाया। अतः द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पश्चिमी देशों की सोवियत संघ से दोस्ती परिस्थितिजन्य एवं स्वार्थों पर आधारित थी। युद्ध समाप्ति के तुरंत बाद दोनों एक दूसरे के प्रबल दुश्मन हो गये उनकी यही दुश्मनी शीत युद्ध के रूप में उभर पड़ी।

(II) द्वितीय मोर्चे का प्रश्न (Question of a second front) :— सन 1943 में जब हिटलर ने रूस को भारी जान-माल की क्षति पहुँचायी तब रूसी नेता ने (स्टालिन) मित्र राष्ट्रों से यूरोप में नाजी फौजों के विरुद्ध दूसरा मोर्चा खोलने का अनुरोध किया। ताकि नाजी सेना का रूसी सेना पर दबाव कम हो सके। दूसरा पश्चिमी मोर्चा सन 1944 में खोला गया। लेकिन तब तक रूस का सब लुट चुका था। अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट और ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल खूब सोच समझ कर और जानबूझकर देरी की जिससे जर्मनी किसी तरह सोवियत संघ की साम्यवादी व्यवस्था का काम तमाम कर दे।

(III) विजित प्रदेशों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने संबंधी मतभेद (Difference regarding domination over conquered territories) द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान धुरी राष्ट्रों से जीते हुए प्रदेशों पर दोनों गुट अपना-अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहते थे जिसके कारण दोनों में मतभेद कायम था।

(IV) अणु बम के रहस्यों को गुप्त रखना (Keeping secret the mystery of Atom Bomb) :— संयुक्त राज्य अमेरिका ने अणु बम का निर्माण से संबंधित जानकारी ब्रिटेन और कनाडा को तो दे दी लेकिन सोवियत संघ से गुप्त रखा। 6 अगस्त 1945 को हिरोशिमा और नागासाकी पर अणु बम के प्रयोग से मित्र राष्ट्रों की मैत्री समाप्त हो गयी क्योंकि अणु बम के निर्माण को गुप्त रखना सोवियत संघ के विरुद्ध षड्यंत्र बताया। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के चार साल बाद सोवियत संघ अणु बम के रहस्य की खोज की।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

(v) युद्ध काल निर्णयों का अतिक्रमण (Infringement of decision of the War Period) :- 1945 के याल्टा सम्मेलन में यह निर्णय हुआ कि नाजियों से मुक्त किए गए राष्ट्र अपनी इच्छानुसार राजनीतिक व्यवस्था चुनेंगे और इसके लिए मित्र राष्ट्रों के बीच सम्मिलित किया-विमर्श किया जायेगा। लेकिन युद्धोपरान्त सोवियत संघ सभी पूर्वी देशों में साम्यवादी शासन व्यवस्था की स्थापना करने में सफल हो गया। अमेरिका और ब्रिटेन सोवियत संघ की कार्रवाई को बर्दाश्त नहीं कर पाये और उन्होंने उस पर साम्राज्यवादी होने का आरोप लगाया।

(vi) ईरान से सेनाएँ हटाने से इन्कार :- (Refusal by the withdraw the forces from Iran) :- द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटेन की सहमति से सोवियत सेनाओं ने ईरान के उत्तरी भाग पर अधिकार कर लिया था। युद्ध समाप्ति के बाद जब ईरान से विदेशी सेनाओं की वापसी का प्रश्न उठा तो Anglo-American force दक्षिण ईरान से हटा ली गई, लेकिन सोवियत संघ फौज नहीं हटाया। बाद में विश्वजनमत तथा संयुक्त राष्ट्र के दबाव में सेना हटी लेकिन पश्चिमी राष्ट्र इस नीति पर संदेह करने लगे।

(VII) तुर्की (टर्की) और ईरान पर सोवियत दबाव (Soviet Pressure on Turkey and Iran) :- युद्ध के बाद टर्की से कुछ भाग और बास्फोरस में नाविक अड्डा बनाने का अधिकार देने के लिए दबाव बनाना शुरू किया। जब हस्तक्षेप बढ़ने लगा तब अमेरिका ने सोवियत संघ को चेतावनी दी कि टर्की पर किसी भी तरह का आक्रमण बर्दाश्त से बाहर है। इसी तरह जर्मनी के काल में यूनान के उत्तरी भूभाग पर कब्जा जमा लिया था। समर्पण से पूर्व सोवियत संघ यूनान के उत्तरी भूभाग पर पश्चिमी शक्तियों ने इसका भी विरोध किया।

(VIII) सुरक्षा परिषद में सोवियत संघ द्वारा निषेधाधिकार का सर्वाधिक प्रयोग (Maximum use of veto in security council by the soviet union) :- अपने को अल्पमत में पाकर सोवियत संघ ने अपने निषेधाधिकार के अधिकतम प्रयोग द्वारा संयुक्त राष्ट्र के कार्यों में बाधाएँ डालना प्रारंभ कर दिया और इसके बल पर उसने अमेरिका तथा पश्चिमी राष्ट्रों के प्रत्येक प्रस्ताव को निरस्त करने की नीति अपना ली। इससे पश्चिमी राष्ट्र सोवियत संघ के आलोचक होते गये।

(IX) सोवियत संघ द्वारा अमेरिका-विरोधी प्रचार अभियान (Anti-American propaganda Campaign by the soviet union) - युद्ध समाप्ति के कुछ समय पूर्व से ही सोवियत पत्रिकाओं में अमेरिका की नीतियों के विरुद्ध आलोचनात्मक लेख प्रकाशित होने लगे थे। इस प्रचार अभियान से अमेरिका के सरकारी और गैरसरकारी क्षेत्रों में तीखी प्रतिक्रिया हुई और उसने बढ़ती हुई साम्यवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाना प्रारंभ कर दिया।

(8) सोवियत संघ द्वारा शांति-वार्ताओं में अवरोध - (Hindrance by the Soviet Union in peace talks) :- सोवियत संघ ने द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद विभिन्न पराजित राष्ट्रों के साथ प्रारंभ की गई शांति वार्ताओं में भी अपने स्वार्थों के अनुकूल और पश्चिमी राष्ट्रों के स्वार्थों के विपरीत माँगें प्रस्तुत करनी शुरू कर दी। पश्चिमी राष्ट्र इस तरह के उपायों से सोवियत संघ का विरोध करने लगे।

उपरोक्त कारणों के अलावे शक्ति की राजनीति, युद्धोत्तर उद्देश्यों में भिन्नता, पश्चिम द्वारा सोवियत विरोधी प्रचार, पश्चिम द्वारा सोवियत संघ को लैंड लीज सहायता देने पर रोक से शीतयुद्ध पनपता गया।

निष्कर्ष :- निष्कर्षतः दो महान शक्तिशाली राष्ट्रों के बीच आपसी प्रतिद्वन्दिता पूरे विश्व के लिए खतरे की घंटी बजने जैसा प्रतीत हुआ। किसी भी कार्य में एक द्वारा दूसरे को नीचा दिखाकर या पछाड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति छोटे राष्ट्रों के बीच कटुता का संदेश पैदा करता है जो गृह युद्ध की ओर मार्ग प्रशस्त करता है।

(समाप्त)

डॉ॰ राजू मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी.के. कॉलेज, डुमराँव
दिनांक - 26/05/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA